• क्रिसमस में...

कैरोल गीत

क्रिसमस पूरे विश्व में सभी देशों में अपने-अपने तरीके से मनाया जाता है। लेकिन इस क्रिसमस के मौके पर एक ऐसी परंपरा है जो कि प्रभु ईंशु के जन्म के बाद से पूरे विश्व में आज भी कायम है। वो है कैरोल गीतों की। क्रिसमस नजदीक आते ही क्रिश्चन बस्तियों में कैरोल गीतों की धूम शुरू हो जाती है। शाम और देर रात तक समुदाय के लोग बस्तियों में कैरोल गीत गाते नजर आते हैं। ये कैरोल गीत सुनने के बाद दिल में उतर जाते हैं। इन गीतों केा सुनकर ही अपने आप में एक अजीब तरह का अहसास होता है।

मसीही समाज के जानकारों का कहना है कि कैरोल गीत प्रभु ईसा के जन्म के समय से भी पहले गाए गए थे। जब प्रभु का जन्म होना था तो स्वर्ग दूत जंगल में गड़रियों को लकड़ी जलाकर आग तापते हुए देखकर उनके पास आए और कहा कि प्रभु का जन्म होने वाला है। उसके बाद देवदूत मंगल गीत गाने लगे। उन्हें गीत गाता देख गड़रियों ने भी गीत गाना शुरू का दिया। उसके बाद जब आधी रात को प्रभु ईशु का जन्म हुआ उससे पहले तक ये गीत गाए गए। ईशु का जन्म बेथलेहम में हुआ था। वहां पर इन गीतों को कैरोल कहा जाता है। तभी से कैरोल गीत हर क्रिसमस के मौके पर गाए जाते हैं। ईशु के जन्म के समय कैरोल गीत जो गया था वह है, आया है ईशु/ आया है आया मसीह/ तू गुनहगारों को देने सहारा...। वैसे तो बहुत सारे कैरल सांग्स हैं। लेकिन

उनमें जो कि आज भी काफी प्रचलित है वह है- आया है ईशु आया है, आया मसीह तू गुनहगारों को देने सहारा। इसके अलावा 'बैथलेहम के गोशाला में चमका एक सितारा' ईसामसीह के जन्म के समय से ही गाया जा रहा है। क्रिसमस ईसाई धर्म को मानने वालों का सबसे बड़ा त्योहार होता हैं। इस दिन का वो लोग सालभर बेसब्री से इंतजार भी करते हैं। इस दिन ईसाई लोग अपने घरों और गिरजा घरों को नए रंगों और रोशनियों से सजाते हैं। वही क्रिसमस के दिन गिरजा घरों में कैंडिल या मोमबत्ती जलाने की भी विशेष परंपरा हैं। इस दिन लोग ईशु की याद में मोमबत्तियां जलाते हैं। उनकी मान्यता है कि ये उनके जीवन में प्रकाश और तरक्की लाता हैं। क्रिसमस के दिन रात में 12 बजे गिरजाघरों में विशेष प्रार्थना की जाती हैं। माना जाता है कि ईसा मसीह का जन्म इसी समय हुआ था। क्रिसमस के दिन केक काटने की भी विशेष परंपरा हैं। इस दिन लोग तरह तरह के पकवान बनाते हैं। लेकिन ईसा के जन्म की खुशी में केक काटने और उसे लोगों में बांटने का विशेष रिवाज होता हैं।

• संपादकीय...

कोरोना से बचाव

कोरोना की कहानी जहां से शुरू हुई थी एक बार फिर वहीं लौटकर आ गई है। चीन से शुरू हुई इस महामारी ने एक बार फिर यहां तबाही मचाना शुरू कर दिया है। चीन, अमेरिका और जापान सहित तमाम देशों में कोरोना का कहर बढ़ने के साथ ही भारत में भी खतरे की घंटी बज चुकी है। बढ़ते मामलों के बीच कोविड के नए वैरिएंट्स को लेकर भी लगातार नई-नई जानकारियां सामने आ रही हैं। यही कारण है कि भारत में हर एक कोविड पॉजिटिव रिपोर्ट की जीनोम सिक्वेंसिंग कराने के निर्देश दिए गए हैं। सरकार की कोशिश है कि देश में एक बार फिर से दूसरी लहर जैसे हालात ना पैदा हों, लिहाजा सरकार का पूरा फोकस उन चीजों पर है, जहां पिछली बार चूक हो गई थी।

दिल्ली एयरपोर्ट पर एक बार फिर से रेंडम टेस्टिंग शुरू हो गई है। इसके लिए यात्रियों को अलग से कोई फीस नहीं देनी होगी, ना ही सैंपल लेने के बाद उन्हें रोका जाएगा। लक्षण वाले यात्रियों से प्रोटोकॉल के अनुसार डील किया जाएगा। पीएम मोदी ने महामारी को देखते हुए लोगों से सतर्क रहने की अपील की है। इस लिए हम सभी को सतर्क रहना होगा और सरकार की ओर से दी गई सभी गाइडलाइन का पालन करना होगा। सभी व्यक्ति भीड़-भाड़ वाली जगहों पर मास्क का उपयोग करें। भीड़-भाड़ वाले इलाकों में जाने से बचें तथा मास्क, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें। सेनेटाइजर का उपयोग या साबुन से बार-बार हाथ धोएं। कोरोना से संबंधित लक्षण दिखने पर तत्काल अपने निकटतम जांच केन्द्र पर जाकर जांच कराएं तथा पॉजीटिव पाए जाने पर डॉक्टर की सलाह अनुसार होम आइसोलेशन / अस्पताल में भरती होकर इलाज करवाएं। इस प्रकार ऐहतियात बरत कर हम इस संक्रमण से अपना ही नहीं दूसरों का भी बचाव कर सकते हैं।

■ **अनल पत्रवाल**
संपादक, हिमाचल अभी अभी

स्वीडन में क्रिसमस का त्यौहार पूरे दिसंबर महीने तक चलता है। लोग काफी धूम-धाम ने 25 दिसंबर को इसे सेलेब्रिट करते हैं।

इसे खास तरीके से मानाने के लिए विषेश स्थान पर एक विशाल बकरी की आकृति बनाई जाती हैं। यूल बकरी प्राचीन बुतपरस्त त्योहारों से जुड़ा एक स्वीडिश क्रिसमस प्रतीक रहा है...

क्रिसमस मनाने के तरीके...

संयुक्त राज्य अमेरिका सहित क्रिसमस की धूम अलग-अलग देशों में नये-नये अंदाज में देखने को मिलती हैं। इस दिन क्रिसमस ट्री को सजाना, हॉलिडे कुकीज बनाना और क्रिसमस उपहार देना आदि जैसी चीजें की जाती है। आज हम आपको बताएंगे कि दुनिया भर में क्रिसमस मनाने के तरीके और उनकी परंपराओं के बारे में-

● **स्वीडन:** स्वीडन में क्रिसमस का त्यौहार पूरे दिसंबर महीने तक चलता है। लोग काफी धूम-धाम ने 25 दिसंबर को इसे सेलेब्रिट करते हैं। इसे खास तरीके से मानाने के लिए विषेश स्थान पर एक विशाल बकरी की आकृति बनाई जाती हैं। यूल बकरी प्राचीन बुतपरस्त त्योहारों से जुड़ा एक स्वीडिश क्रिसमस प्रतीक रहा है। 1966 में क्रिसमस को इस तरह से मनाने का विचार आया था। जिसे लोगों ने अपना लिया। अब इसे गवले बकरी कहा जाता है। आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार, बकरी 42 फीट से अधिक ऊंची, 23 फीट चौड़ी और 3.6 टन वजनी है। हर साल एक ही स्थान पर विशाल बकरी का निर्माण किया जाता है। प्रशंसक आगमन के पहले रविवार से नए साल के बाद तक लाइवस्ट्रीम भी देख सकते हैं जब तक इसे हटा नहीं जाता है।

● **फिलीपींस:** अगर आपको लगता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका क्रिसमस की सजावट सबसे अच्छी करता है तो आपको देखना चाहिए कि फिलीपींस क्या करता है। हर साल, सैन फर्नांडो शहर में लिग्लिगन पारुल (या जाइंट लैंटर्न फेस्टिवल) आयोजित होता है, जिसमें चमकदार पारोल (लालटेन) होते हैं, जो बेथलहम के स्टार का प्रतीक हैं। प्रत्येक पैरोल में हजारों कताई रोशनी होती है जो रात के आकाश को रोशन करती है। त्योहार ने सैन फर्नांडो को 'फिलीपींस की क्रिसमस राजधानी' बना दिया है।

● **जापान:** क्रिसमस जापान में राष्ट्रीय अवकाश नहीं है लेकिन यहां के नागरिक इसे काफी धूमधाम से मनाते हैं। जापान में रहने वाले इसाई नागरिकों के लिए यह काफी खास होता है। नागरिक जश्न मनाने का एक दिलचस्प और स्वादिष्ट तरीका ढूंढते हैं। टर्की डिनर के लिए टेबल के चारों ओर इकट्ठा हुआ जाता है। परिवार अपने स्थानीय स्तर पर पर केंटकी फ्राइड चिकन बनाते हैं और टर्की टर्की डिनर के लिए निकल जाते हैं। यह परंपरा 1974 में 'कुरीसुमासु नी वा केंटाक्की!' नामक एक बेतहाशा सफल विपणन अभियान के बाद शुरू हुई! फास्ट फूड सीरीज ने अपनी यूलटाइड लोकप्रियता को बनाए रखा है, जिसके कारण कुछ लोगों को महीनों पहले अपने बक्से का ऑर्डर देना पड़ता है या अपने 'फिंगर लिकिन 'अच्छा' भोजन प्राप्त करने के लिए दो घंटे लंबी लाइनों में खड़े रहना पड़ता है।

● **आइसलैंड:** अमेरिका में क्रिसमस के 12 दिनों के समान, आइसलैंड 13 दिन तक मनाता है। क्रिसमस से पहले प्रत्येक रात, 13 यूल लैड्स द्वारा आइसलैंडिक बच्चों का दौरा किया जाता है। इस दिन बच्चे अपने जूते खिड़की के पास रखकर सोने चले जाते हैं सुबह अगर वह अच्छे बच्चे है तो उनके जूते से केंडी या टॉफी निकलती है अगर बच्चा गंदा या शरारती है तो उसके जूते से सड़े आलू निकलते हैं।

● **फिनलैंड:** फिनलैंड में क्रिसमस के दिन एक गेम खेलने की प्रथा है। क्रिसमस की सुबह, फिनिश परिवार परंपरागत रूप से चावल और दूध से बने दलिया को मक्खन के साथ खाते हैं। जिसे इस खीर के अंदर बदाम मिलता है वह इस खेल का विजेता होगा है। कई बार कुछ परिवार धोखा देते हैं और कुछ बादाम छुपाते हैं ताकि बच्चों को बुरा न लगे।

● **न्यूजीलैंड:** चूंकि किवी लोगों के लिए क्राइस्टमास्टाइम के दौरान गर्मी पड़ती है इस लिए उनकी कई परंपराएं एक बार्बी- ग्रिल के आसपास होती हैं। इस दिन परिवार और दोस्त ताजा समुद्री भोजन, मांस और मौसमी सब्जियों को मिलाकर एक स्पेशल डिन बनाने किए इकट्ठा होते हैं। न्यूजीलैंड का क्रिसमस ट्री पोहुटुकावा है, जो एक तटीय प्रजाति है जो दिसंबर में चमकीले-लाल रंग में खिलता है, धूप के दिनों में छाया प्रदान करता है।

● **डेनमार्क:** डेन में ईसाई धर्म आने से पहले, क्रिसमस का दिन उज्ज्वल दिनों का उत्सव था। आज, घरों को निसर नामक अंधविश्वासी पात्रों से सजाया जाता है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे सुरक्षा प्रदान करते हैं। 24 दिसंबर की शाम को, डेनिश परिवार अपने क्रिसमस ट्री को कमरे के बीच में रखते हैं और कैरल गाते हुए उसके चारों ओर नृत्य करते हैं।

• यहां पर...

अजीबोगरीब रिवाज...

25 दिसंबर को पूरी दुनिया में क्रिसमस का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन को भगवान यीशु के जन्म दिवस के उपलक्ष में मनाया जाता है। देश-विदेशों में इस त्योहार को लेकर बड़ी धूम देखी जाती है और कई दिनों पहले से ही इसकी तैयारियां शुरू हो जाती है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि क्रिसमस के दौरान कई देशों में ऐसे अजीबोगरीब रिवाज निभाए जाते हैं, जिन्हें जानकर आप भी हैरान रह जाएंगे। क्रिसमस में क्रिसमस ट्री के ऊपर लाइट्स और बेल्स लगाने की सजावट तो आपने खूब देखी होगी। लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि यूक्रेन में अलग तरीके से क्रिसमस की सजावट की जाती है। यहां पर लोग मकड़ी के जाले से घर को सजाते हैं। नॉर्वे में क्रिसमस पर झाड़ू को छुपाने का रिवाज है। इसके पीछे एक कहानी है जिसमें कहा जाता है कि जिन लोगों के घर के बाहर झाड़ू दिखती है वहां शैतान बसने लगते हैं। ऐसे में लोग क्रिसमस से पहले अपने घरों में झाड़ू छुपा देते हैं। जिस तरीके से हैलोवीन में लोग डरावना वेश धारण करते हैं, उसी तरह से ऑस्ट्रिया में भी क्रिसमस के दौरान भी लोग डरावना रूप लेकर सड़कों पर घूमना शुरू कर देते हैं। इसके पीछे की वजह यह है कि कुछ लोग भूतों को अपना दुश्मन मानते हैं और बच्चे उनसे बहुत डरते हैं। इस तरह से क्रिसमस पर लोगों को भूत बना देखकर बच्चों का डर कम होता है।

• दान के पीछे राज..

क्रिसमस पर लोगों को उपहार और जरूरतमंद लोगों को कपड़े, मिठाइयां और खाने की चीजें बांटी जाती है। मान्यता है कि उपहार एक तरह का दान है। जिससे खुशी मिलती है। जरूरतमंद लोगों को उपहार देने से तमाम समस्याएं दूर हो जाती है। क्रिसमस पर ईसा मसीह के सामने मोमबत्तियां जलाकर लोग उनसे जीवन में प्रकाश की कामना करते हैं। बताते हैं कि ईसा मसीह के सामने अलग-अलग रंगों की मोमबत्तियां जलाने से जीवन में खुशियां और सफलता आती हैं।